भारतीय रेल पत्रिका का इतिहास

भारतीय रेल के तकनीकी साहित्य को हिन्दी भाषा में रेल प्रेमियों तक पहुँचाने के लिए एक हिन्दी मासिक पत्रिका की मांग काफी समय से उठ रही थी । 21 लोकसभा सांसदों द्वारा तत्कालीन रेल मंत्री स्व. श्री जगजीवन राम को लिखे गए पत्र के परिप्रेक्ष्य में रेलमंत्री के आदेश पर 'भारतीय रेल' पत्रिका का पहला अंक 15 अगस्त, 1960 को प्रकाशित किया गया था।

'भारतीय रेल' पत्रिका के पहले अंक की कुल एक हज़ार प्रतियाँ प्रकाशित की गई थीं। जिसकी कुल पृष्ठ संख्या कवर सहित 44 थी । पत्रिका का वार्षिक सदस्य शुल्क सर्व साधारण के लिए छ रुपये तथा रियायती दर पर रेलकर्मियों के लिए चार रुपये थी । एक अंक का मूल्य 60 पैसे था।

प्रथम अंक के अवसर पर तत्कालीन रेल मंत्री श्री जगजीवन राम, रेल उपमंत्री शाहनवाज खां तथा सं. वै. रामस्वामी के बहुत सारगर्भित संदेश भी प्रकाशित किए गए थे।

पहले अंक से ही वरिष्ठतम रेल अधिकारियों के अलावा पत्रिका के विशेषांक के लिए समय-समय पर रेल मंत्री, रेल राज्य मंत्री और अध्यक्ष रेलवे बोर्ड तथा अन्य बोर्ड के अन्य सदस्यगण और क्षेत्रीय रेलों तथा उत्पादन इकाइयों के महाप्रबंधक लिखते रहे हैं।

भारतीय रेल पत्रिका का पहला विशेषांक रेल सप्ताह अंक अप्रैल 1961 में प्रकाशित किया गया। पत्रिका के वार्षिक विशेषांक की माँग तो हमेशा ही रही है, किंतु कई अन्य विशेषांक भी खूब चर्चा में रहे। अक्टूबर 1964 में 'आत्मनिर्भरता विशेषांक', अक्टूबर 1968 में 'पर्यटन विशेषांक', नवंबर1965 में 'एशियाई रेल सम्मेलन अंक' खूब सराहे गए। नवंबर, 1976 में प्रकाशित 'रेलें और उद्योग विशेषांक' भी खूब चर्चा में रहा। भारतीय रेल का 1979 में प्रकाशित पर्यटन अंक तो इतना लोकप्रिय हुआ था कि पाठकों की माँग के चलते उसे पुनर्मुद्रित कराना पड़ा।

विशेषांक की परंपरा को बरकरार रखते हुए हाल के महिनों में 'महिला एवं बाल', 'अंतरराष्ट्रीय खेलों में भारतीय रेल', 'रेल संग्रहालय', 'गांधी और भारतीय रेल' आदि रोचक विशेषांक प्रकाशित किए गए हैं ।

इस पत्रिका में हिन्दी साहित्य को भी सम्मानिय स्थान प्रदान किया जाता रहा है । पत्रिका के प्रतिष्ठित लेखकों में स्व.श्री विष्णु प्रभाकर, श्री कमलेश्वर, डॉ. प्रभाकर माचवे, श्री पुरुषोत्तम दास टंडन से लेकर आर. के. पचौरी तक शामिल रहे हैं।

आंध्र प्रदेश, आसाम, मध्य प्रदेश, पंजाब, बिहार, केरल, हिमाचल प्रदेश व पश्चिम बंगाल की राज्य सरकारों के शिक्षा विभाग द्वारा अपने स्कूल- कोलेजों के लिए इस पत्रिका को मान्यता प्रदान की गई थी ।

भारतीय रेल में 1960 के बाद के सारे रेल बजट तथा उन पर सारगर्भित समीक्षाएं विस्तार से प्रकाशित हो रही हैं। इस दौर की सभी प्रमुख रेल परियोजनाओं और घटनाओं को भारतीय रेल में प्रमुखता से कवरेज दिया गया है। इसी नाते अनुसंधानकर्ताओं के लिए यह पत्रिका एक अनिवार्य संदर्भ है।

वर्ष 2016 में राष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त गृह मंत्रालय का 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' तथा 2019 में तमाम प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के बीच एबीसीआई पुरस्कार भारतीय रेल पत्रिका को मिल चुका है।

आरम्भ में यह पत्रिका श्वेत-श्याम हुआ करती थी। आज यह रंगीन होने के साथ-साथ आर्ट पेपर पर छपती है। अपनी पाठ्य सामग्री के साथ-साथ बेहतरीन साज-सज्जा के कारण आज यह किसी भी लोकप्रिय पत्रिका से कम नहीं है।

हमारे पाठक सरलता से पत्रिका की सदस्यता प्राप्त कर सकें इस हेतु आईआरसीटीसी के सहयोग से ओनलाइन सदस्यता तथा पेमेन्ट की सुविधा शुरू की गई है ।

भारतीय रेल पत्रिका के भूतपूर्व संपादकों की जानकारी -

1960	कृष्ण गुलाटी	संपादक
	रामचंद्र तिवारी	सहायक संपादक
1974	रामचंद्र तिवारी	संपादक
1988	स्वराज सक्सेना	संपादक
1989	प्रमोद कुमार यादव	संपादक
2007	प्रमोद कुमार यादव	परामर्शदाता
2008	विनय कुमार	प्रभारी संपादक (डी.डी. पी.आर)
2009	अरविंद कुमार सिंह	परामर्शदाता/संपादक
2011	सिद्धार्थ सिंह	प्रभारी संपादक (डी.डी.पी.आर)
2015	रमाकांत पांडेय	परामर्शदाता
2017	योगेश अवस्थी	संपादक